B.A. (Hons) Part-I
Paper-II
Abnormal-Psychology
By - Dr. Ramendra Kumar Singh.
HOD, Psy.
Dr. K. College, Dumraon
(Buxar)

HYSTERIA
उन्माद

असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में उन्माद (Hysteria) का अध्ययन बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसी के अध्ययन के फलस्वरूप शार्को, फ्रायड, जेने, मार्टिन प्रिंस आदि का नाम मनोविज्ञान के इतिहास में अमर हो गया। उन्माद एक आम विकृति है जिसे फ्रायड ने Conversion Hysteria के नाम से पुकारा। DSM IV (1994) में इसे Somatoform Disorder का एक प्रतिनिधि प्रकार माना गया है। आजकल इस विकृति को Conversion disorder के नाम से जाना जाता है।

'Hysteria' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'HYSTERA' से हुई है जिसका अर्थ गर्भाशय (Uterus) होता है। हिपोक्रेटस आदि का मानना था कि यह ऐसी विकृति है जो केवल महिलाओं को होती है। महिलाओं की गर्भाशय जब घूमते-घूमते किसी खास स्थल पर रुक जाती है तो वह उन्माद से ग्रस्त हो जाती है और शादी ही इसका निदान है। आधुनिक अनुसंधानों द्वारा इस विचारधारा को रद्द कर दिया गया है। आधुनिक अध्ययनों से यह ज्ञात हो गया है कि यह बीमारी स्त्रियों एवं पुरुषों दोनों को ही होता है। परन्तु यह भी ज्ञात हो चुका है कि यह रोग पुरुषों की तुलना में औरतों को अधिक होता है।

इसकी परिभाषा मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित दी है। कोलमैन के अनुसार -

"उन्माद एक ऐसी विकृति है जिसमें अक्सर किसी शारीरिक रोग के असामान्यता के कई लक्षण देखे जाते हैं; अर्थात रोगी का मानसिक द्वंद्व शारीरिक रोगों के लक्षणों में परिवर्तित हो जाता है।"

इसी प्रकार पेज ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है? —

Scanned with CamScanner

"उन्माद जीवन की कठिनाइयों के प्रति सामंजन स्थापित करने हेतु अभ्यास और अनियोजित प्रतिक्रियात्मक चेष्टा है जो शारीरिक अयोग्यता के रूप में पलायन की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति है।"

उन्माद की एक बड़ा स्पष्ट और अच्छी परिभाषा Holms (1998) के द्वारा दी गई है जो निम्न प्रकार है!—

"Conversion disorders is a disorder in which the individual has one or more mejor Physical symptoms for which an organic basis can not be found. The symptoms. for which usually impair functioning."

अर्थात - रूपान्तरण विकृति एक ऐसी विकृति है जिसमें व्यक्ति ऐसे एक अथवा दो शारीरिक लक्षणों से पीड़ित होता है जिसके कोई कायिक आधार नहीं होते हैं, ऐसे लक्षण प्रायः कार्यवाही को विकृत बना देते हैं।"

उन्माद के नैदानिक स्वरूप अथवा लक्षण
Clinical Picture or Symptoms of Hysteria

उन्माद को लक्षणों के आधार पर दो भागों में बाँटा जाता है!—

(A) रूपान्तरण उन्माद (Conversion Hysteria)

(B) ~~मनो~~विच्छेदी उन्माद (Dissociative Hysteria)

जिन रोगियों में शारीरिक लक्षणों की प्रधानता होती है, उन्हें Conversion hysteria कहा जाता है। ठीक इसी तरह जिन रोगियों में मानसिक लक्षणों की प्रधानता होती है, उन्हें Dissociative-hysteria कहा जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि उन्माद में शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के लक्षण पाये जाते हैं।

शारीरिक लक्षण:- उन्माद से पीड़ित रोगियों में ज्ञानवाही विकृतियाँ (Sensory disorders) एवं क्रियात्मक विकृतियाँ (Motor disorders) के अलावे अंतरावयव विकृतियाँ (Disorders related to visceral functioning) जैसे - डकार, गला भरी होना, मिचली, मिथ्यागर्भधारण के लक्षण पाये जाते हैं। कुछ प्रमुख शारीरिक विकृति-लक्षण निम्नवत् है!—

(1) **लकवा** - उन्माद के रोगियों के पेशीय लक्षणों में सबसे अधिक प्रमुख अंगों में लकवाग्रस्त होना है। लेकिन ऐसे लकवा का कोई शारीरिक आधार नहीं होता है। प्रायः उन्माद में पाँव अथवा हाथ संवेदन शून्य हो जाते हैं। ऐसे रोगी बिछावन पर पड़े-पड़े अपने पाँव एवं हाथ को हिला सकते हैं, जबकि सामान्य लकवा में ऐसा नहीं होता-

द्वितीय विश्वयुद्ध में यह देखने में आया कि बहुत सारे सैनिक चलने फिरने में असमर्थ हो गये थे, जबकि मेडिकल जाँच में सारे अंग ठीक पाये गये। शारीरिक स्नायु ठीक थे।

(2) स्पंदविकृति (Tics) :- इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति में Tics के लक्षण पाये जाते हैं। इससे पीड़ित व्यक्ति कभी आँख नचाता है तो कभी मुँह सिकोड़ता है, कभी सिर हिलाते रहता है। ऐसी क्रियाएँ स्वतः होती हैं; क्योंकि इन क्रियाओं का ज्ञान उस व्यक्ति को नहीं रहता है। ये सभी स्पंदविकृति कहलाती हैं। इस तरह के पीड़ित लक्षणों वाले व्यक्ति का यदि ध्यान दिलाया जाए तो वे इसे रोक लेते हैं।

(3) तंत्रिक प्रकम्पन :- उन्माद से पीड़ित व्यक्ति के अंग विशेष में प्रकम्पन देखा जाता है।

(4) आवाज विकृति - ऐसे व्यक्ति की आवाज धीमी एवं फुस-फुसाहट भरी होती है। बोलने में असमर्थ होते हैं जिन्हें Aphonia and Mutism कहा जाता है।

(5) मूर्छा, बेहोशी - रूपान्तरण उन्माद से पीड़ित व्यक्ति में मूर्छा या बेहोशी के लक्षण पाये जाते हैं। इन्हें झटका या दौरा पड़ता है। इनकी मूर्छा सामान्य मूर्छा से अलग होती है। ऐसी मूर्छा सामान्यतः अपने परिचित व्यक्ति की उपस्थिति में आती है।

(2) संवेदी लक्षण - यानी वैसी विकृतियाँ जो ज्ञानेन्द्रियों से संबंध रखती हैं। इन ज्ञानेन्द्रियों में किसी प्रकार के मेडिकल दोष नहीं होते - मुख्य संवेदी लक्षण।

(i) दृष्टि विकृति (visual disorders) :- उन्माद से ग्रस्त व्यक्ति में आंशिक या पूर्ण अंधापन पाया जाता है जिसे Functional blindness कहा जाता है। रोगी एक वस्तु को देखता है तो दूसरे वस्तु या व्यक्ति को नहीं देखने की शिकायत करता है। कभी कभी Double vision की शिकायत मिलती है। एक ही व्यक्ति उसे दो-दो दिखाई पड़ते हैं।

(ii) श्रवण विकृति (Auditory Disorders) रोगी के

में बहरापन के लक्षण पाये जाते हैं, जो आंशिक या पूर्ण कुछ भी हो सकता है। रोगी कोई आवाज धीमी रहने पर भी सुन लेता है तो कभी उसे सुनाई ही नहीं पड़ती, कभी दूसरे तरह की आवाज सुनाई पड़ती है। specific deafness पायी जाती है।

(iii) संवेदनशीलता विकृति :- इस विकृति से रोगी के किसी अंग की संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है। इस तरह की विकृति में Anesthesia Hyperthesia, Paresthesia आदि आती हैं। स्पर्श के प्रति अधिक संवेदनशीलता होती है। त्वचा में जलन, खुजली एवं गुदगुदी होती है। Anesthesia में शरीर के किसी अंग की संवेदनशीलता खत्म हो जाती है, तो Hypesthesia में किसी अंग में आंशिक संवेदना शून्यता आ जाती है, Hyperthesia अतिसंवेदनशीलता का लक्षण विकसित हो जाता है। Anathesia में दुःख दर्द का ज्ञान नहीं रहता है। Paresthesia में चींटी की आवाज आदि सुनाई पड़ती है।

उन्माद के मानसिक लक्षण :-

उन्माद से पीड़ित व्यक्ति में कुछ मानसिक लक्षण भी प्रकट होते हैं। इस तरह के लक्षण उन्माद के मनोविच्छेदी स्वरूप में पाये जाते हैं :-

(i) स्मृतिलोप (Amensia) :- उन्माद से ग्रस्त रोगी में आंशिक या पूर्णतः स्मृतिलोप पाया जाता है। ये अपने पूर्व परिचित लोगों का नाम एवं पता नहीं याद कर पाते हैं और पहचान नहीं पाते हैं।

(ii) आत्मविस्मृति (Fuge) :- उन्माद से पीड़ित व्यक्ति अपना नाम एवं पता भी भूल जाते हैं। फिशर के अनुसार- आत्मविस्मृति एक उन्मादी आक्रमण है, जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन को भूल जाता है और अपने वातावरण को छोड़ देता है। इसका एक उदाहरण विलियम जेम्स ने अपने पुस्तक में दी है। एक एन्सेलबोर्न नाम के पादरी चेक भुनाया और अपना नाम पता भूल गया और ट्रेन पर सवार होकर दूसरे शहर में जाकर ब्राउन नाम से दुकान खोल लिया और पुनः सब छोड़कर कुछ दिनों बाद लौट आया और अपने को एन्सेलबोर्न नाम बताने लगा।

(iii) निद्राभ्रमण (Somnabulism) :- यह भी एक प्रमुख लक्षण है ऐसे मरीज नींद में घूमते हैं और अपना कार्य भी कर लेते हैं और फिर नींद में ही आकर अपने बिछावन पर आकर सो जाता है। नींद में घूमते समय उसकी आँखें खुली रहती हैं। कभी-कभी रोगी की चोट भी हो जाती है और मौत भी हो जाती है। सुबह होने पर जब पूछा जाता है तो रात की बातें कुछ भी याद नहीं रहती है।

कोलमैन ने एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया है जो नींद में चार करते समय कार से टकराकर घायल हो गया। नींद में झकझोर कर या जोर का आवाज देकर जगाने पर जगता है।

(iv) संवेगात्मक अस्थिरता (मूर्च्छा) :- उन्माद का मरीज कभी हंसता है, कभी चिल्लाता है, कभी रोता है, दाँत किटकिटाता है, कपड़ा नोचता है। कभी-कभी रोगी Hysterical fit से भी ग्रस्त हो जाता है।

(v) द्वैध व्यक्तित्व (Dual Personality) :- कभी खुश एवं उछल कूद करता है, सामाजिक व्यवहार करता है तो कुछ घंटों बाद दुःखी शांत एवं निष्क्रिय पड़ा रहता है। एक नाम से अच्छा काम करती है तो दूसरे नाम से बुरा व्यवहार करती है।

कारण Etiology :-

उन्माद के कारणों के संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों में मतैक्य नहीं है। तथापि यहाँ पर हम कुछ ऐसे Common Causes की चर्चा करेंगे, जो निम्नलिखित है :-

(i) मानसिक आघात (Mental trauma) :- मानसिक आघात या चोट व्यक्ति को जब लगता है तो वह अन्दर से टूट जाता है। प्रेम में असफलता, दुःखद समाचार, प्रेम में असफलता, वैवाहिक जीवन की उथल-पुथल व्यक्ति को गहरा रूप से प्रभावित करता है, वह इसे सहन नहीं कर पाते हैं और व्यक्तित्व छिन्न-भिन्न हो जाता है। ऐसे लोगों को उन्माद से ग्रस्त होने की संभावनाएँ बढ़ा देती है।

(ii) अचेतन की लैंगिक इच्छाएँ :- मनोविश्लेषणवादियों का मानना है कि अचेतन मन की दमित लैंगिक इच्छाएँ चेतन में आने के लिए सक्रिय रहती है जिससे अचेतन द्वन्द्व की उत्पत्ति होती है। इन्हीं द्वन्द्वों का समाधान शारीरिक लक्षणों में उभरता है और वह उन्माद से पीड़ित हो जाता है। Davison & Neale (1996) का मानना है कि उन्मादी ऐंठनों (Convulsion) में दमित लैंगिक इच्छाओं का अंश होता है।

(iii) दोषपूर्ण अनुशासन :- उन्माद के विकास का एक प्रमुख कारण (Faulty discipline है। अति कठोर एवं शिथिल अनुशासन में पलने वाले बच्चों में आत्मविश्वास एवं आत्मनियंत्रण की योग्यता का उचित विकास नहीं हो पाता है, जिसके कारण वे बाद में आगे चलकर उन्माद का शिकार हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(iv) संक्रमय स्थिति :- उन्माद के प्रमुख कारणों में भयानक संक्रमय स्थिति भी एक कारण अवश्य है। संक्रमय परिस्थितियों से बचाव का ~~लक्षण वि~~ लिए उन्माद का लक्षण विकसित हो जाता है। Ziegler (1960) ने अपने अध्ययनों में पाया कि विश्वयुद्ध के समय सैनिकों में इस तरह के लक्षण विकसित हो गया था।

(v) आयु एवं यौन भिन्नता :- अध्ययनों से इस बात की पुष्टि हुई है कि इस रोग की उत्पत्ति का एक प्रमुख कारण आयु एवं यौन भिन्नता है। इस रोग का आक्रमण प्रायः 13-19 वर्ष के आयु यानी किशोरावस्था में होता है। अध्ययनों से यह भी साबित हो चुका है कि यह रोग पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक होता है।

(vi) व्यक्तित्व का ~~शी~~ शीलगुण :- उन्माद के विकास में व्यक्तित्व का शीलगुण एक प्रधान कारण है; जिन लोगों का अहम् कमजोर होता है और अतिसंवेदनशील एवं आवेगशील होते हैं वैसे लोगों में उन्माद का विकास होता है।

(vii) ~~दोषपूर्ण~~ सामाजिक सांस्कृतिक कारण :- उन्माद के विकास में परिवार की समाजार्थिक स्थिति, सामाजिक मानक का भी हाथ होता है। यह रोग निम्न समाजार्थिक स्थिति वाले लोगों एवं देहाती क्षेत्र के लोगों में अधिक होता है। क्रास संस्कृति अध्ययनों से यह सिद्ध हो चुका है कि खास तरह की संस्कृतियों में इसे पनपने के ज्यादा अवसर मिलते हैं।

उपचार :- उन्माद के उपचार में मनोवैज्ञानिक प्रविधियों यथा मनोविश्लेषण, व्यवहार चिकित्सा, पारिवारिक चिकित्सा एवं समुदाय चिकित्सा का उपयोग किया जाता है। मनोविश्लेषण विधि से अचेतन की दमित कामुक विचारों को कुरेदकर बाहर निकाला जाता है और Ego को मजबूत बनाया जा सकता है। इसी तरह व्यवहार चिकित्सा का Modling, Flooding, Aversive Conditiong, Token Economy आदि प्रारंभ कारगर है।

R Singh
01.06.2020
Dr. Ramandra Kumar Singh
H.O.D Psy
D.K. college, Dumraon
Buxar